

ISSN 2455-0310

LISTED UNDER
UGC APPROVED LIST OF JOURNALS

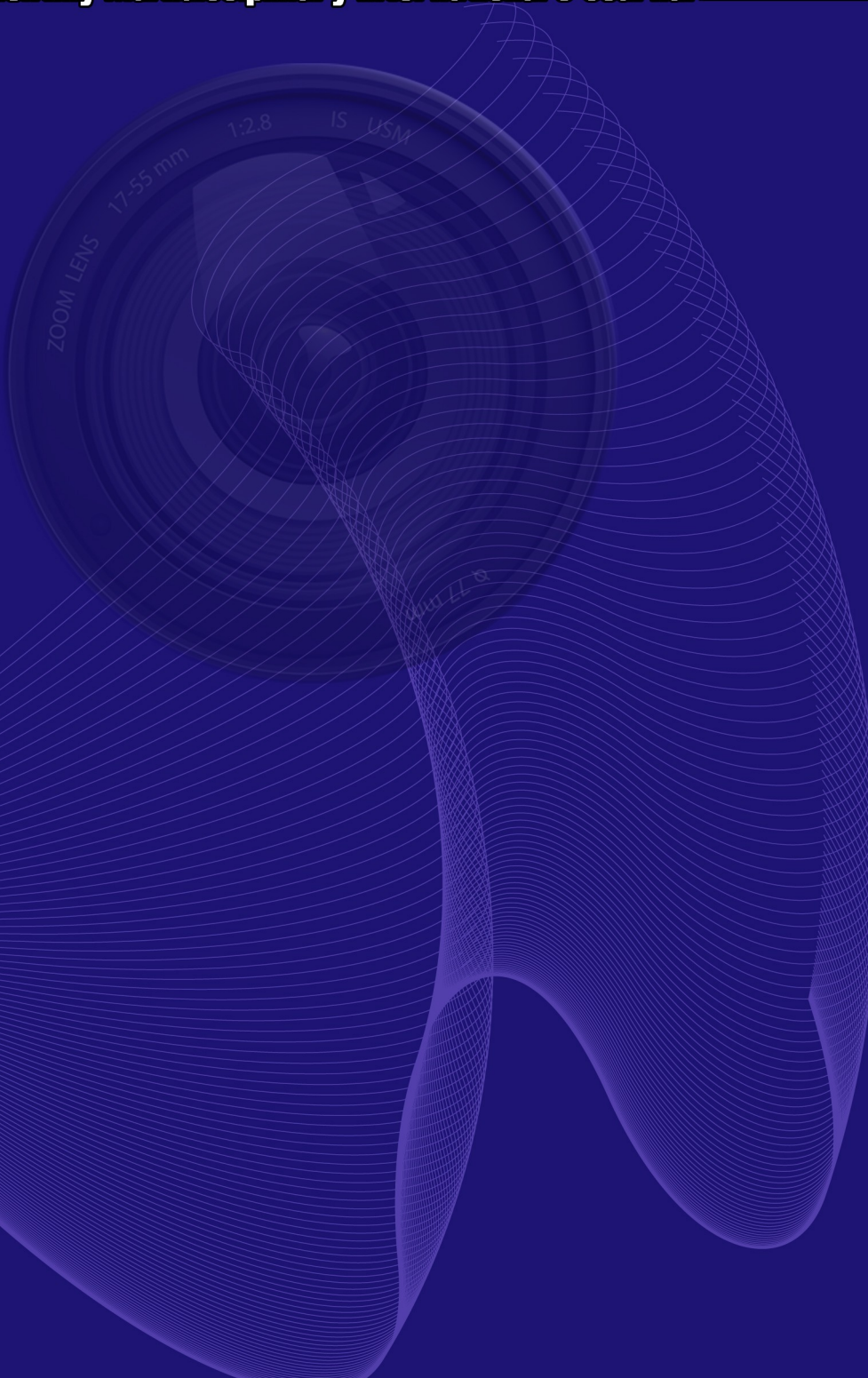
3.3

TRANSFRAME

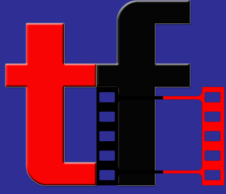
A Bilingual, Bimonthly Multidisciplinary International e-Journal

VOLUME 3, ISSUE 3

JANUARY - FEBRUARY 2018



पूर्वोत्तर भारतीय राज्य मेघालय: एक संक्षिप्त परिचय



भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में मेघालय का विशेष स्थान है। मेघालय के बारे में अपनी समझ विकसित करने के लिए हमें इसके विकास के विभिन्न आयामों पर निगाह डालनी होगी, जिससे इसके ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक तथा आर्थिक पक्ष की जानकारी मिल सके।

ऐतिहासिक पक्ष:

पूर्वोत्तर राज्यों में मेघालय गारो, खासी तथा जयंतिया आदिवासी समूहों की धरती है। इसे पूर्व का स्कॉटलैण्ड भी कहते हैं।

मेघालय के नामकरण के पीछे कोई ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं मिलते हैं। यहां अप्रैल के अंतिम सप्ताह से लेकर सितंबर तक घनघोर बारिश होती है। इस मौसम में बादलों से घिरे इस क्षेत्र की छटा अद्भुत और बड़ा ही आकर्षक होती है। इसलिए इसका नाम संस्कृत शब्द 'मेघ' से मेघालय (मेघों का आलय) यानी कि बादलों का घर पड़ा।

इस राज्य की मुख्यतः तीन जनजातियां गारो, खासी तथा जयंतिया के संबंध में कई ऐतिहासिक बातें प्रचलित हैं। "पूर्वोत्तर भारत में रहने वाली ये जनजातियां मंगोल हैं जो चीन, तिब्बत और बर्मा के जनजातियों से प्राजातीय और सांस्कृतिक रूप से सम्बद्ध थे। खासी और जयंतिया, जनजाति तिब्बत-चीन और तिब्बत-बर्मा प्रजाति से लगभग सम्बद्ध थे।"¹

इतिहासकारों के अनुसार खासी जनजाति दक्षिण पूर्व एशिया से बर्मा के रास्ते खासी और जयंतिया पहाड़ियों पर रहने लगी। कहा जाता है कि वे ईसा के जन्म के पश्चात् चौथी शताब्दी में असम में आर्यों के आने के पहले आ चुके थे। प्राचीन संस्कृत साहित्यों में भी खासी के बारे में कोई विवरण नहीं प्राप्त होता है। 1500 में रचित शंकरदेव की कृति 'भगवत पुराण' में इनका उल्लेख किया गया है। इसके बाद इस जनजाति के बारे में विशेष जानकारी 19वीं सदी के बाद मिलती है।

जयंतिया जनजातियों का उल्लेख 'बुरंजी' नामक लेख में मिलता है। हालांकि यह विश्वसनीय कम और विवादास्पद ज्यादा है। इसके अनुसार अहोम राजाओं का जयंतिया राजाओं के साथ 17 शताब्दी के आरंभ में वैवाहिक सम्बंध स्थापित हुआ था। 1766 में अंग्रेजों का सिलहट (बांग्लादेश का एक जिला) पर अधिकार हुआ तो उस समय खासी सिलहट की सीमा पर स्थित पंदुआ नामक स्थान पर व्यापार करने आते थे।

सन् 1824 में बर्मियों ने कछार पर आक्रमण कर जयंतिया पहाड़ियों की सीमाओं तक आ पहुंचे। तब 10 मार्च, 1824 को एक संधि पर हस्ताक्षर हुए जिसमें जयंतिया राजाओं ने बर्मियों के आक्रमण से अपनी सुरक्षा के लिए अंग्रेजों की सुरक्षा को स्वीकार कर लिया।

“गारो जनजाति के सम्बंध में भी इतिहास में हमें कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलते हैं। फिर भी

अनिल कुमार गुप्ता

शोध छात्र

राजनीतिशास्त्र विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय,

इलाहाबाद

ई-मेल-

mr.anilkugupta@gmail.com

Mob.: 9415026529

कुछ साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जाता है कि ये प्रागैतिहासिक काल में सीधे तिब्बत से गारो पहाड़ियों में आकर बस गये। आज भी गारों जनजाति तिब्बत को ही अपना मूल निवास स्थान मानते हैं।²

आधुनिक काल में सन् 1905 में बंगाल के बंटवारे के दौरान मेघालय को असम और पूर्वी बंगाल के एक नये हिस्से के रूप में मान्यता मिली। सन् 1912 में जब विभाजन रद्द हुआ तब मेघालय असम राज्य का एक अभिन्न हिस्सा बन गया। सन् 1947 में भारत के आजादी के वक्त दो जिलों वाले मेघालय को असम के अन्दर ही सही अर्थों में स्वायत्तता मिली।

राजनीतिक पक्ष:

मेघालय पूर्वोत्तर भारत का मूलतः एक पहाड़ी राज्य है। जैसा कि हमने पिछले भाग ऐतिहासिक पक्ष में देखा था कि मेघालय को बंगाल विभाजन रद्द (1912) होने के बाद असम राज्य का अभिन्न हिस्सा बना दिया गया। तत्पश्चात् सन् 1947 में असम के अंदर ही इसे स्वायत्तता दे दी गयी। किंतु आगे चलकर 1954 में यहां के लोगों ने एक अलग राज्य की मांग की, जिसे 1956 में राज्य पुनर्गठन आयोग ने स्वीकार नहीं किया। बाद में असम के अंतर्गत 2 अप्रैल, 1970 को मेघालय राज्य का गठन एक स्वायत्तशासी राज्य के रूप में हुआ। सन् 1971 में उत्तर-पूर्व अधिनियम क्षेत्र के पारित होने के बाद 21 जनवरी, 1972 को मेघालय को एक पृथक पूर्ण राज्य के रूप में मान्यता मिली।

22,429 वर्ग किमी क्षेत्रफल वाले इस राज्य की उत्तरी और पूर्वी सीमाएं असम से एवं दक्षिणी तथा पश्चिमी सीमाएं बांग्लादेश से मिलती हैं। यहां का मासिनराम भारत ही नहीं, अपितु विश्व का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है। ‘मेघालय की राजधानी शिलांग को ‘पूर्व का स्कॉटलैण्ड’ कहा जाता है।³

मेघालय भी एक सदनात्मक विधानमण्डल है। इस राज्य की विधानसभा 60 सदस्यीय है। राज्य से लोकसभा में 2 तथा राज्यसभा में एक प्रतिनिधि हैं। इस राज्य के जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन के लिए भारतीय संविधान की छठवीं अनुसूची में अनेक उपबंध भी किये गये हैं।

‘मेघालय की अनूठी विशेषता इसकी जिला परिषद है। यह मेघालय न्याय पालिका की एक विशिष्टता है। विभिन्न देशी जन जातियों के रिवाजों और अधिकारों की सुरक्षा जिला परिषद की एक मात्र जिम्मेदारी है। यही जिला परिषद विभिन्न आदिवासी जनजातियों के हितों और अधिकारों की रक्षा करने में भी खास भूमिका अदा करती है।⁴

सामाजिक पक्ष:

मेघालय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि यहां मुख्यतया तीन प्रमुख जनजातियों का प्रभुत्व पाया जाता है। ये हैं गारो, खासी और जयंतिया। राज्य में खासी समूह के लोग अधिकतम संख्या में हैं, जो मुख्य रूप से राज्य के पूर्वी भाग में रहते हैं। इसके अलावा ये समूह जयंतिया पहाड़ियों में भी निवास करते हैं। ‘जयंतिया पहाड़ियों में निवास करने वाले खासी जनजाति को जयंतिया जनजाति के नाम से पुकारा जाता है। उन्हें नार्श (Pnars) भी कहते हैं।⁵ गारों यहां का दूसरा सबसे बड़ा समूह है। मेघालय में निवास करने वाले अन्य समूहों में मिकिर, महार, बोरो तथा लखर सम्मिलित है। ‘लगभग 15 प्रतिशत आबादी में बंगाली तथा शेख है।⁶ यह एक रोचक पहलू है कि ‘मेघालय देश के उन तीन राज्यों में एक है जहां पर ईसाई बहुमत है। अन्य दो राज्य नगालैण्ड और मिजोरम भी भारत के उत्तर पूर्व में ही स्थित है।⁷ खासी समूह कैथोलिक हैं, जबकि गारो बैप्टिस्ट।

इस प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र की जनजातीय संस्कृति और लोक परंपरा अलग-अलग रही है। यहां की सभी जनजातियों में मातृसत्तात्मक प्रथा का प्रचलन है, जिसके अन्तर्गत संपत्ति पर मां का अधिकार होता है। और बाद में ‘संपत्ति और पारिवारिक

उत्तराधिकार मां से बेटी को जाता है।’⁸ इन जनजातियों में विवाह सम्बंध अपने कुलगोत्र या वंश के बाहर होते हैं।

19वीं सदी के मध्य में ईसाई मिशनरियों के आगमन से यहां की संस्कृति एवं परंपरा को काफी नुकसान हुआ है तथा इनके प्रभाव से यहां के रहन-सहन आदि में महत्वपूर्ण बदलाव भी आये हैं। यहां की परंपरागत पोशाक ‘जैनसेम’ और ‘धारा’ है, परन्तु पश्चिमी पोशाक आजकल की पीढ़ी में काफी चर्चित हो रहे हैं। पारंपरिक खासी पुरुष सामान्यतः बिना कॉलर वाले लम्बे कोट पहनते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में ‘जिमफोंग’ कहते हैं। खासी समुदाय की महिलाएं कई कपड़ों के टुकड़े शरीर के चारों तरफ बांधती हैं, जबकि गारों महिलाएं आमतौर पर काले कपड़े प्रयोग में लाती हैं।

पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों की भांति मेघालय में भी अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। इन भाषाओं में मुख्य तौर पर गारो, खासी एवं नार शामिल हैं। यहां के “‘लोगों द्वारा मुख्य रूप से बोली जाने वाली भाषा ‘खासी’ को आस्ट्रो-एशियाई भाषा माना जा सकता है। खासी आस्ट्रो-एशियाई परिवार का अभिन्न अंग है।”⁹ इसके अतिरिक्त गारों समुदाय के बारे में माना जाता है कि इनकी अपनी कोई लिपि नहीं है। ईसाई मिशनरियों के आगमन के बाद “इनकी भाषा की लिपि रोमन हो गयी।”¹⁰ वर्तमान में खासी और गारो इन दोनों भाषा को आधुनिक भारतीय भाषा की सूची में सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त वार चैरापूंजी और हिन्निआम आदि अन्य बोलिया भी प्रचलित हैं।

मेघालय की साक्षरता दर 2001 में 63.31 प्रतिशत थी जो 2011 में 75.48 प्रतिशत हो गयी जिसमें पुरुष साक्षरता 77.17 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 73.78 प्रतिशत है।¹¹

जैसा कि हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं कि मेघालय भारत के उन तीन राज्यों में से एक है जहां ईसाई बहुमत है। भारत सरकार की 2011 के जनगणना के आंकड़ों के अनुसार यहां 74.59 प्रतिशत जनसंख्या ईसाई है। यहां पाई जाने वाली जनजातियों में 90 प्रतिशत गारो तथा 80 प्रतिशत खासी ईसाई हैं। इसके अतिरिक्त दूसरी सबसे अधिक जनसंख्या हिन्दुओं की है जो 11.52 प्रतिशत है जिसमें 97 प्रतिशत से अधिक हजांग तथा 98.53 प्रतिशत कोच जनजाति हिन्दू हैं। इसके अतिरिक्त राज्य में 4.39 प्रतिशत मुस्लिम, 0.18 प्रतिशत सिख, 0.33 प्रतिशत बौद्ध, 0.02 प्रतिशत जैन, 8.70 प्रतिशत प्रकृतिवादी, 0.35 प्रतिशत अन्य धर्म के लोग रहते हैं।

राज्य में धार्मिक समुदाय का विवरण¹²

क्र०सं	धर्म	जनसंख्या प्रतिशत
1	हिन्दू	11.52%
2	इस्लाम	4.39%
3	ईसाई	74.59%
4	सिख	0.10%
5	बौद्ध	0.33%
6	जैन	0.02%
7	प्रकृतिवादी	8.70%
8	अन्य	0.35%

मेघालय के लोग अनेक प्रकार त्यौहार उत्सुकतापूर्वक बड़े धूमधाम से मनाते हैं। ‘का पांबलेग-नॉगक्रेम’ और ‘शाद सुके मिनसिम’ खासी जनजातियों को दो प्रमुख धार्मिक त्यौहार हैं। नोगक्रेम डांस के नाम से प्रसिद्ध ‘का पांबलेग-नॉगक्रेम’ पांच दिनों तक मनाया जाने वाला वार्षिक त्यौहार है। यह त्यौहार शिलांग से 11 किमी० की दूरी पर स्थित ‘स्मित’ नामक गांव में मनाया जाता है। गारों जनजातियों का मुख्य त्यौहार ‘बांग्ला’ है जो अपने देवता सलजोंग (सूर्य देवता) के लिए उनके सम्मान में मनाते हैं। यह

100 ढोलक वाला त्योहार है। इसके अतिरिक्त 'डोरे गाता', 'देन बिलसिया', 'रोंगचू गाला', 'चंबिल मेसारा', 'मि अमुआ मनगोना', जामंग सिया आदि कुछ अन्य त्योहार भी गारो मनाते हैं। जयंतिया लोगों का प्रमुख उत्सव है बेहदिनखलम लाहो नृत्य आदि।

प्राकृतिक भव्यता तथा सांस्कृतिक विरासत के कारण मेघालय को लोग बेहद खूबसूरत पर्यटन स्थल मानते हैं। यहां के पर्यटन स्थलों में मुरलेन नेशनल पार्क और दम्फा टाइगर रिजर्व प्रमुख हैं। राजधानी शिलांग में भी अनेक आकर्षण के केन्द्र हैं, जिनमें वार्ड लेक, लेडी हैदरी उद्यान, उमियाम झील, मिनी चिड़िया घर, पोलो ग्राउंड, ऐलीफैंट जलप्रपात, शिलांग की चोटी प्रमुख हैं। इसके अलावा खासी हिल्स का मोनोटिय, जाकरेम जोवाम ओर बल पकरम राष्ट्रीय पार्क, नतियांग, नोकरेक बायोस्फियर, तुरा एवं सीजू की गुफाएं भी बड़ी संख्या में लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र हो सकते हैं।

आर्थिक पक्ष:

पूर्वोत्तर भारत में असम के बाद मेघालय ही एक ऐसा राज्य है जो विराट प्राकृतिक संसाधनों से भरा है, जिसका लाभ राज्य को आर्थिक विकास में मिल सरहा है। प्राकृतिक वैभव और सांस्कृतिक विरासत वाला मेघालय एक कृषि प्रधान राज्य है। "यहां की लगभग 81 प्रतिशत जनसंख्या आजीविका के लिए मुख्य रूप से खेती-बाड़ी पर निर्भर है।"¹³ कृषि में इतनी बड़ी जनसंख्या के संलग्न होने के बावजूद भी "इस क्षेत्र का राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान एक तिहाई ही है।"¹⁴

चावल और मक्का इस राज्य की मुख्य फसलें हैं। प्रदेश के नकदी फसलों में आलू, अदरक, हल्दी, काली मिर्च, सुपारी पान, टैपियोका, कपास, पटसन, सरसों व तोरिया शामिल हैं, जिनमें आलू की पैदावार सबसे अधिक होती है। "इस समय गैर-परंपरागत फसलों जैसे तिलहनों (मूंगफली, सोयाबीन और सूजगुखी), काजू, स्ट्रॉबेरी, चाय और काफी, मशरूम, जड़ी-बूटियों, आर्किड और व्यावसायिक दृष्टि से उगाये जाने वाले फूलों की खेती पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।"¹⁵

खनिज संपदाओं के क्षेत्र में भी मेघालय पूर्वोत्तर भारत में एक अग्रणी राज्य है। यहां के प्राकृतिक संसाधनों में कोयला, चूना-पत्थर, सिलीमेनाइट, चिकनी मिट्टी, ग्रेनाइट आदि भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं जिसका देश के अनेक उद्योगों में उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त यहां के कोयले का कुछ पड़ोसी देशों में निर्यात भी किया जाता है।

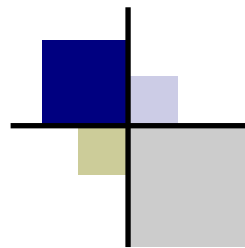
स्वतंत्रता के बाद भारत में औद्योगिकीकरण के प्रयास शुरू किये गये। इसी दिशा में जब 1971 में मेघालय को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला, तब यहां मेघालय इण्डस्ट्रियल विकास निगम लिमिटेड की स्थापना की गयी, जो कि राज्य की वित्तीय एवं औद्योगिक विकास संस्था है, जो उद्योग के प्रोत्साहन के लिए स्थानीय उद्यमियों को वित्तीय सहायता देती है। "इस राज्य में प्रदूषण वाले संयंत्रों को स्थापित करने पर प्रतिबंध है, इसलिए यहां इलेक्ट्रॉनिक, फूड प्रोसेसिंग इकाई, लकड़ी आधारित उद्योग आदि की काफी संभावना है।"¹⁶

वर्तमान में प्रदेश में लगभग 1560 लघु उद्योग¹⁷ कार्यरत हैं, जिनके सवर्द्धन में जिला औद्योगिक केन्द्र कार्य कर रहा है। पूर्वोत्तर भारत में बेरोजगारी और गरीबी का स्तर, राष्ट्रीय स्तर से अधिक होने के बावजूद मेघालय ही एक ऐसा राज्य है "जहां बेरोजगारी दर सबसे कम है, जो 0.9 प्रतिशत है। इसके अलावा यहां 11.87 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है।"¹⁸

संदर्भ-सूची:

- 1 Sarin, V.I.K., India's North-East in Flames, Vikas Publishing House, New Delhi, 1980, p. 10

2. भूषण, चन्द्र, पूर्वोत्तर भारत और अलगाववाद, समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ0सं0 17
3. भसीन, अनीस, भारत के राज्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0-291
4. website: hindi.mapsofindia.com/Meghalaya/
5. भूषण, चन्द्र, पूर्वोत्तर भारत और अलगाववाद, समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ0सं0 41
6. website: Bharatdiscovery.org/india/Meghalaya
7. Ibid
8. भसीन, अनीस, भारत के राज्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0-296
9. website: hindi.mapsofindia.com/Meghalaya/
10. भूषण, चन्द्र, पूर्वोत्तर भारत और अलगाववाद, समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ0सं0 42
11. website: Meghalaya.gov.in
12. Population by religion community, 2011. Census of India. 2011
13. भारत-2015, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ0 सं0 926
14. website: en.wikipedia.org/wiki/Meghalaya
15. website: knowindia.gov.in/hindi/knowindia/state-uts.php?id=18
16. भूषण, चन्द्र, पूर्वोत्तर भारत और अलगाववाद, समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ0सं0 63
17. भसीन, अनीस, भारत के राज्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0-295
18. योजना, अप्रैल 2016, पृ0सं0 32



www.transframe.in

ISSN 2455-0310



9 772455 031007